B.A – Part – III
Sub – Pol. Science.
Paper – III (Political Thought)

Topic – "मॉण्टेस्क्यू का राज्य की उत्पत्ति सम्बन्धी विचार" एवं विधि सम्बन्धी विचार"

DR. Dhananjay Jha.
Asst. Prof. Guest faculty/Part time
Deptt. of Pol. Science.
L.S. College, Muzaffarpur
M – 8210688019.

⟹ गौरतलब है कि जहाँ एक ओर हॉब्स, लॉक और रूसो ने राज्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में सामाजिक अनुबन्ध का सिद्धान्त (Theory of Social Contract) का प्रतिपादन किया है, या हम यों कहें कि राज्य की उत्पत्ति हॉब्स, लॉक एवं रूसो के सामाजिक अनुबन्ध/सामाजिक समझौता सिद्धान्त (Social Contract Theory) का प्रतिफल है वहीं दूसरी ओर हम देखते हैं कि मॉण्टेस्क्यू ने राज्य की उत्पत्ति के सम्बन्ध में सामाजिक अनुबन्ध या सामाजिक समझौता के सिद्धान्त को अस्वीकार करते हुए राज्य की उत्पत्ति का कारण उपयुक्त वातावरण एवं परिस्थितियों को माना है।

⟹ मॉण्टेस्क्यू के अनुसार, मानव का आरम्भिक अवस्था में निवास राज्यहीन/राज्यविहीन वातावरण में था। अन्य विचारकों की भाँति मॉण्टेस्क्यू भी मानव के प्रारंभिक अवस्था को प्राकृतिक अवस्था की ही संज्ञा देता है। साथ ही वह यह भी मत व्यक्त किया कि मनुष्य की यह प्राकृतिक अवस्था शांत और उत्तम नहीं थी। वह कहता है कि मनुष्य प्राकृतिक अवस्था में भयभीत रहता था किन्तु शनैः-2 परिस्थितियाँ बदलीं, मनुष्य में बुद्धि एवं ज्ञान का विकास हुआ और भय की अवस्था से वह मुक्त होने लगा।

⟹ मॉण्टेस्क्यू स्पष्ट तौर पर कहता है कि बदलते हुए परिस्थिति के अनुसार मनुष्य में ऐसी भावनाएं जाग्रत होने लगी कि अपने से निर्बल व्यक्तियों को दबाकर उसे अपने नियंत्रण में रखा जाए, अर्थात् प्रभुत्व/स्वामित्व की भावना जाग्रत हो उठी। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मनुष्यों में अपने से निर्बलों पर शासन करने की भावना का उदय हुआ। मनुष्यों की इस प्रवृत्ति का स्वाभाविक परिणाम यह निकला कि युद्ध और संघर्ष की भावनाएं उत्तरोत्तर बढ़ती गई क्योंकि सभी लोग एक दूसरे को दबाकर उन पर शासन करने की दिशा में सोचने लगे। इस तरह मानव इतिहास में एक ऐसी अवस्था भी आई जिसमें शासक और शासित इन दो वर्गों का आरम्भ हुआ। इस प्रकार हम देखते हैं कि शासन करने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति, विशेष परिस्थितियों और उपयुक्त वातावरण के कारण ही राज्य नामक संगठन की उत्पत्ति हुई।

⟹ मॉण्टेस्क्यू ने मानव स्वभाव, प्राकृतिक अवस्था और राज्य की उत्पत्ति का जो चित्रण प्रस्तुत किया है, वह हॉब्स और लॉक के विचारों से सर्वथा भिन्न है। उसका मानना है कि प्राकृतिक अवस्था में मनुष्य भीरु एवं मूर्ख थे।

⟹ मॉण्टेस्क्यू सामाजिक संविदा/सामाजिक समझौता/सामाजिक अनुबन्ध के सिद्धान्त को पूर्णतया ठुकराते हुए राज्य की एक सावयवी/आंगिक
10 SUNDAY (organic) कल्पना प्रस्तुत करता है और राज्य को वातावरण का उपज तथा स्वतः विकसित होने वाली संस्था मानता है। इसी बात को डायल ने अपने शब्दों में वर्णन करते हुए लिखा है कि मॉण्टेस्क्यू के लिए राज्य, उसके सदस्यों के बीच सामाजिक संविदा/अनुबन्ध अथवा समझौते का परिणाम नहीं था अपितु अपने वातावरण की उपज था और प्रकृति के कानून से अनुशासित था। इस प्रकार, मॉण्टेस्क्यू के लिए राज्य का स्वरूप सावयव (organic) था।

⇐ : मॉण्टेस्क्यू का विधि सम्बन्धी विचार : ⟹

यदि गौर से देखा जाए तो मॉण्टेस्क्यू के कानून अथवा विधि की धारणा ही वास्तव में वह सूत्र है जो मिस्र, फ्रांसीसी राजतन्त्र के इतिहास, अर्थशास्त्र, जलवायु, भूगोल, ब्रिटिश संविधान एवं बहुत से अन्य विषयों पर प्रकट किये गये असम्बद्ध विचारों को एकता के बन्धन में बाँधने का कार्य करता है। मॉण्टेस्क्यू की विधि सम्बन्धी धारणा अन्य सभी धारणाओं में सबसे अधिक कठिन किन्तु सबसे अधिक रोचक एवं महत्वपूर्ण है।

⟹ मॉण्टेस्क्यू से पूर्व की बात यदि किया जाए तो इसके पहले कानून के स्वरूप के सम्बन्ध में विभिन्न धारणाएँ प्रचलित थीं। कुछ विचारक इसे विवेक-बुद्धि का आदेश (Dictate of Reason) समझते थे, उदाहरण के तौर पर हम प्लेटो एवं अरस्तू का नाम ले सकते हैं। वहीं दूसरी ओर बोदां एवं हॉब्स जैसे विचारक इसे (कानून/विधि को) उच्चतर शक्ति/सर्वोच्च शक्ति का आदेश (Command of the Superior) मानते थे।

⟹ मॉण्टेस्क्यू ने प्लेटो एवं अरस्तू तथा बोदां एवं हॉब्स के विचारों से असहमति प्रकट करते हुए कहा कि कानून अपने विस्तृत अर्थ में वस्तुओं की प्रकृति या स्वरूप से उत्पन्न होने वाले आवश्यक सम्बन्ध है (Laws are the necessary relations arising from the nature of things)। इस प्रकार हम देखते हैं कि कानून को व्यापक रूप (Comprehensive form) देकर और कार्य-कारण के सामान्य सम्बन्ध (General relationship of cause and effect) को उसके अन्तर्गत समाविष्ट करके मॉण्टेस्क्यू ने वस्तुतः अपने ग्रंथ 'स्पिरिट ऑफ लॉज़' में कानून के एक नये दर्शन का सूत्रपात/निर्माण किया है। यही कारण है कि कतिपय आलोचक

Limitations live only in our minds. But if we use our imaginations, our possibilities become limitless.-Jamie Paolinetti

Important Works | Important Calls | Important Meetings

ने स्पष्ट तौर पर कहा है कि ऐतिहासिक विधिशास्त्र का अध्ययन 'स्पिरिट ऑफ लॉज' से आरम्भ होता है।

⟹ मॉण्टेस्क्यू द्वारा प्रस्तुत कानून की उपर्युक्त लक्षण काफी व्यापक है और संसार/विश्व की समस्त जड़-चेतन वस्तुओं के सम्बन्ध में है। वह आगे कहता है कि प्रकृति जगत बुद्धिहीन है क्योंकि इसमें सोचने-समझने की शक्ति नहीं है। यह युग-युगान्तर से चला आ रहा था तथा इसे अनुशासित करने वाले नियम स्थायी, अविकारी और अपरिवर्तनशील है।

⟹ मॉण्टेस्क्यू मानव-स्वभाव (Human nature) का वर्णन करते हुए आगे कहता है कि मनुष्य अज्ञानी और काम, क्रोध, लोभ मोह आदि की भावनाओं के भंवर में फंस जाने वाला प्राणी (being) है, वह ईश्वर द्वारा प्रदान की गई वाक् शक्ति एवं अन्य शक्तियों का दुरुपयोग करता है। इसी को आगे बढ़ाते हुए मॉण्टेस्क्यू कहता है कि मनुष्य अपनी प्रजनन शक्ति का दुरुपयोग अपनी कामुकता को सन्तुष्ट करने के लिए करता है। मॉण्टेस्क्यू का यह भी मानना है कि मनुष्यों के लिए यह स्वाभाविक है कि वह आवेगों में बहकर ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्यों को विस्मृत कर दे। अतः इसे उनका स्मरण कराने हेतु धर्म के कानून (धार्मिक कानून) हैं।

⟹ मॉण्टेस्क्यू का स्पष्ट तौर पर कहना है कि अन्य सभी नियमों/कानूनों के बनने से पूर्व मनुष्य अपने प्राकृतिक दशा/प्राकृतिक अवस्था के प्राकृतिक नियमों से अनुशासित होता था। उसके विचार से प्रकृति का प्रथम नियम आत्मरक्षा (Self preservation), शांति एवं सुरक्षा की आकांक्षा है। उसका मानना है कि प्राकृतिक अवस्था में

Worry is a total waste of time. It doesn't change anything. All it does is steal your joy and keep you very busy doing nothing.

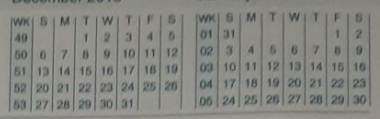

ने स्पष्ट तौर पर कहा है कि ऐतिहासिक विधिशास्त्र का अध्ययन 'स्प्रिट ऑफ लॉज' से आरम्भ होता है.

⟹ मॉण्टेस्क्यू द्वारा प्रस्तुत कानून को उपर्युक्त लक्षण काफी व्यापक है और संसार/विश्व की समस्त जड़-चेतन वस्तुओं के सम्बन्ध में है। वह आगे कहता है कि प्रकृति जगत बुद्धिविहीन है क्योंकि उसमें सोचने-समझने की शक्ति नहीं है। यह युग-युगान्तर से चला आ रहा था तथा इसे अनुशासित करने वाले नियम स्थायी, अविकारी और अपरिवर्तनशील हैं।

⟹ मॉण्टेस्क्यू मानव-स्वभाव (Human nature) का वर्णन करते हुए आगे कहता है कि मनुष्य अज्ञानी और काम, क्रोध, लोभ मोह आदि की भावनाओं के भंवर में फंस जाने वाला प्राणी (being) है, वह ईश्वर द्वारा प्रदान की गई वाक् शक्ति एवं अन्य शक्तियों का दुरुपयोग करता है। इसी को आगे बढ़ाते हुए मॉण्टेस्क्यू कहता है कि मनुष्य अपनी प्रजनन शक्ति का दुरुपयोग अपनी कामुकता को सन्तुष्ट करने के लिए करता है। मॉण्टेस्क्यू का यह भी मानना है कि मनुष्यों के लिए यह स्वाभाविक है कि वह आवेगों में बहकर ईश्वर के प्रति अपने सम्बन्धों को विस्मृत कर दे। अतः इसे इनका स्मरण कराने हेतु धर्म के कानून (धार्मिक कानून) हैं।

⟹ मॉण्टेस्क्यू का स्पष्ट तौर पर कहना है कि अन्य सभी नियमों/कानूनों के बनने से पूर्व मनुष्य अपने प्राकृतिक दशा/प्राकृतिक अवस्था के प्राकृतिक नियमों से अनुशासित होता था। उसके विचार से प्रकृति का प्रथम नियम आत्मरक्षा (self preservation), शांति एवं सुरक्षा की आकांक्षा है। उसका मानना है कि प्राकृतिक अवस्था में

मानव डरपोक था। आलस्य की भावनाओं और संकटों से बचने के लिए तथा भोजन, वस्त्र और आवास सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मानव-स्वभाव ने उसे सम्भवतः शीघ्र ही अन्य मनुष्यों के साथ संगठित होने के लिए प्रेरित किया। प्रकृति का दूसरा नियम यह है कि जीवन-निर्वाह और सुरक्षा के लिए मनुष्य को अपने अन्य साथियों के साथ संगठित होना चाहिए।

⟹ माण्टेस्क्यू के मतानुसार, मनुष्य परस्पर अपने व्यक्तियों के साथ मिल कर अपनी शक्ति बढ़ाने लगे और इस प्रकार समाज में युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई। अब मानवीय आचरण सिर्फ प्रकृति के नियमों / प्राकृतिक नियमों से अनुशासित नहीं रह सका, तब इस अवस्था में प्राकृतिक नियमों की पूर्ति मानव-कृत कानूनों द्वारा करनी पड़ी।

⟹ माण्टेस्क्यू के अनुसार, प्रकृति जगत में केवल एक ही प्रकार के कानून होते हैं, जबकि मानव-जगत में दो प्रकार के कानून होते हैं। जैसा कि जोन्स ने लिखा है मानव-कार्यों के क्षेत्र में प्राकृतिक कानून के अलावा एक प्रकार का अन्य कानून भी होता है जिसे माण्टेस्क्यू विधेयात्मक अथवा मानवकृत कानून की संज्ञा देता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि माण्टेस्क्यू दो प्रकार के कानून की बात करता है प्रथम - प्राकृतिक कानून और द्वितीय मानव-कृत कानून अथवा मानवीय कानून। मानवीय कानून को ही वह विधेयात्मक कानून भी कहता है।

मानवीय कानून की प्रकृति

⟹ माण्टेस्क्यू मानवीय कानून की प्रकृति को बतलाते हुए प्राकृतिक कानूनों से इनके अन्तर को स्पष्ट करता है।

⟹ (1) मानव-कृत कानून या मानवीय कानून या सामाजिक कानून या विधेयात्मक कानून, विध्यात्मक स्वभाव बनाये हुए विशिष्ट और सुनिश्चित स्थान होते हैं।

⟹ (2) ये कानून (मानवीय कानून) सार्वभौमिक (Universal) नहीं होते और न ही यह आवश्यक है कि वे अविकारी हों।

⟹ (3) ये कानून परिवर्तनशील होते हैं, इन पर समाज के स्वरूप, जलवायु, धर्म, नैतिक नियमों आदि का प्रभाव पड़ता है।

⟹ (4) समाज में होने वाले परिवर्तनों और विकास से मानव सम्बन्धी कानून (मानवीय कानून) प्रभावित होते रहते हैं। साथ ही देश, काल, परिस्थिति और समाज विशेष के जरिये इनके स्वरूप में परिवर्तन आते रहते हैं।

Note: ⟹

अपने सम्पूर्ण रूप में कानून वह चीज है जो समाज को उसका विशिष्ट और अद्वितीय चरित्र प्रदान करता है।

मानवीय कानून | सामाजिक कानून | विधेयात्मक कानून के प्रकार: ⟹

- (i) अन्तर्राष्ट्रीय कानून (International law)

मॉण्टेस्क्यू के अनुसार:
- (ii) राजनीतिक कानून / संवैधानिक कानून (Political law)
- (iii) नागरिक कानून (civil law)